BA-I
Paper-II
Unit-5

Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/PT)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com

Topic :⇒ Leibnitz : Monadology

(लाइबनिज : चिदणुवाद)

लाइबनिज का द्रव्य सिद्धान्त चिदणुवाद कहा जाता है। उनके अनुसार चिदणु विश्व के परम, सूक्ष्म, न्यूनतम तथा विशेष पदार्थ है। ये शक्तिसम्पन्न अनश्वर तथा चेतन है। इसी अनेक अविभाज्य एवं चेतन तत्व को लाइबनिज चिदणु कहा है। ये चिदणु ही विश्व के परम द्रव्य है। देकार्त के अनुसार द्रव्य के दो प्रकार है :- सापेक्ष द्रव्य एवं निरपेक्ष द्रव्य। चित, अचित सापेक्ष द्रव्य है और ईश्वर निरपेक्ष द्रव्य है। स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य केवल एक है जैसा निरपेक्ष द्रव्य ईश्वर है। चित-अचित ईश्वर के गुण है। लाइबनिज के अनुसार द्रव्य अनेक है। सभी द्रव्य चेतन रूप मे है। यही अनेक द्रव्य जिसे लाइबनिज ने चिदणु नाम दिया है जगत के मूल कारण है। यह अचेतन अणुरूप नहीं बल्कि चेतन शक्ति रूप है। इसी चेतन तत्वों से संपूर्ण सृष्टि की रचना हुई है।

लाइबनिज का द्रव्य विचार देकार्त एवं स्पिनोजा के द्रव्य विचार एवं परमाणुवादियों के द्रव्य विचारों का समन्वय है। देकार्त तथा स्पिनोजा ने द्रव्य को स्वतंत्र होने के साथ-साथ असीमित माना है। इसी अर्थ में स्पिनोजा ईश्वर को एकमात्र द्रव्य मानता है जो असीमित और अनंत दोनो है। लाइबनिज के अनुसार स्वतंत्र होने का अर्थ स्वतंत्र क्रियाशक्ति है। इस प्रकार से द्रव्य वह है जो स्वतंत्र क्रियाशक्ति से युक्त है। विश्व के प्रत्येक वस्तु में कुछ न कुछ क्रियाशीलता एवं गतिशीलता पायी

Scanned with CamScanner

जाती है। इस आधार पर लाइबनित्ज ने देकार्त स्पिनोजा के मान्यताओं के विपरीत अनेक स्वतंत्र सक्रिय और विशिष्ट चिदणुओं के रूप में द्रव्य को स्वीकार किया है।

लाइबनित्ज के चिदणु एवं भौतिकवादियों के अंतिम पदार्थ परमाणुओं में भेद है। जहाँ भौतिक पदार्थों का अंतिम अवयव परमाणु होता है, वहीं लाइबनित्ज के अनुसार चेतन का अंतिम पदार्थ चिदणु है। वैज्ञानिक परमाणुओं को शक्तिरूप अचेतन मानता है। लाइबनित्ज परमाणुओं को चेतनरूप अविभाज्य एवं शक्तिसंपन्न मानता है। इसी को लाइबनित्ज ने चिदणु (Monad) कहा है। सरलता एवं अविभाज्यता के कारण चिदणु परम द्रव्य है। विश्व के सभी पदार्थ इसी मौलिक शक्ति के परिणाम है। इसी मौलिक शक्ति के संघात से संसार के सभी वस्तुओं का निर्माण होता है। चिदणुओं के अलग होने से विनाश होता है। मौलिक चिदणु का न उत्पत्ति न विनाश होता है। संघात वस्तु की उत्पत्ति एवं विनाश के अधीन है। इस प्रकार से चिदणु अकारण अजन्मा तथा अविनाशी है।

लाइबनित्ज के अनुसार चिदणुओं में दो प्रकार की प्रक्रिया होती है (i) प्रत्यक्ष (Perception) (ii) प्रवृत्ति (Appetition).

(i) प्रत्यक्ष - यह प्रक्रिया चिदणु की वह आंतरिक शक्ति है जिसके द्वारा वह अपने अंदर संपूर्ण विश्व को धारण करने की क्षमता रखती है। इसी कारण लाइबनित्ज ने कहा है कि प्रत्येक चिदणु विश्व का दर्पण है।

(ii) परिलक्षित या प्रवृत्ति :- इसके अन्तर्गत प्रत्येक चिदणु एक प्रत्यक्ष से दूसरे प्रत्यक्ष की ओर अग्रसर होती है। अर्थात अपने से उच्चतर चिदणु की ओर अग्रसर होती है। इसी प्रवृत्ति के कारण प्रत्येक चिदणु अपने उच्चतर अवस्था की ओर गति करती है।

लाइबनित्ज के अनुसार विश्व में असंख्य चिदणु है। प्रत्येक चिदणु का कार्य संपूर्ण विश्व को प्रतिबिंबित करना है। लेकिन प्रत्येक चिदणु में चेतना के स्तर पर भेद होता है। उच्च कोटि के चिदणु मानव एवं निम्न कोटि के चिदणु पत्थर, पेड़ पौधों आदि

Scanned with CamScanner

में चेतना के स्तर पर भेद होता है। यहाँ तक की एक श्रेणी के चिदणु मानव में भी चेतना के स्तर सदैव असमान होता है। इस प्रकार से सभी चिदणु का स्वभाव प्रत्यक्ष और प्रवृति है। ये सभी प्रत्यक्ष के सभी संभावित विकास के स्तरों को अभिव्यक्त करते हैं। एक ही चेतन शक्ति विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होती है।

लाइबनिज ने चेतना के आधार पर चिदणुओं को पाँच वर्गों में विभाजित किया है।

(i) जड़ चिदणु :- ये सबसे निम्न कोटि के चिदणु हैं। इसमें निर्जीव जगत के वस्तु आते हैं। जैसे पत्थर, ईंट, टेबल आदि।

(ii) उपचेतन चिदणु :- इस समूह के चिदणु का चेतना का अनुभव तो होता है परन्तु उसमें क्रियाशीलता नहीं होती। इसमें वनस्पति जगत आते हैं।

(iii) चेतन चिदणु :- इसके अन्तर्गत पशु पक्षियों का संसार आता है।

(iv) आत्मचेतन चिदणु :- इसके अन्तर्गत मानव जगत के लोग आते हैं। इसमें संवेदना शक्ति, सुगंध की शक्ति, मंथरण की शक्ति के साथ-साथ ज्ञान विज्ञान की अभिव्यक्ति होती है।

(v) परम चिदणु :- लाइबनिज इसके अन्तर्गत सर्वोच्च चिदणु ईश्वर को रखा है। यह चिदणुओं का भी आत्मा है। वह समस्त चिदणुओं का स्रष्टा और अंतिम प्रयोजन है।

प्रत्येक चिदणु का अंतिम लक्ष्य परम चिदणु होना है। इस प्रकार से लाइबनिज चिदणु को चित्स्वरूप मानते हैं। ज्ञान ही इसका मुख्य कार्य है। एक ही चेतन शक्ति विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त है। जहाँ पत्थर में चेतना कम है वहीं मनुष्यों में अधिक। परन्तु सभी एक ही श्रृंखला के विभिन्न कड़ियाँ हैं।

लाइबनिज के अनुसार संसार में असंख्य चिदणु हैं प्रत्येक चिदणु चेतन तथा शक्तिमान है। प्रत्येक चिदणु के भीतर संपूर्ण विश्व समाहित है। अर्थात व्यष्टि में समष्टि का प्रतिबिम्ब है। चिदणु संसार का लघुरूप है। लघु में विराट समाहित है। इस प्रकार से प्रत्येक चिदणु पूरे विश्व को प्रतिबिम्बित करता है। चिदणु की खास विशेषता यह है कि प्रत्येक चिदणु गवाक्षहीन (Windowless) है।

Scanned with CamScanner

अर्थात् बाह्य प्रभाव से रहित है। यह पूर्ण एवं आत्मनिर्भर है। प्रत्येक चिदणु स्वतंत्र एवं अविभाज्य अंतिम चेतन अवयव है। यह अपने ढंग से विश्व को प्रतिबिम्बित करता है। लेकिन प्रत्येक चिदणु में चेतना के स्तर पर भेद है। जो स्पष्ट प्रतिबिम्बित करता है वह अधिक सक्रिय होता है, जो अस्पष्ट प्रतिबिम्बित करता है वह कम सक्रिय होता है। पूर्णतः स्पष्टः प्रतिबिम्बित उच्चतम चिदणु (ईश्वर) करता है। अन्य सभी न्यूनाधिक भाव से प्रतिबिम्बित करते हैं।

प्रत्येक चिदणु चेतन है। एक ही नियम से अनुशासित हैं। तो वे विश्व को अलग-अलग ढंग से प्रतिबिम्बित इसलिए करते हैं कि पूर्णतः चेतन चिदणु ईश्वर को छोड़कर सभी प्रकार के चिदणु में कुछ मात्रा में जड़ता अवश्य होती है। जो कुसुम जड़ता (Materia Prima) उनके क्रिया में अवरोध उत्पन्न करती है। इस जड़ता के कारण चिदणुओं के स्वभाव में सीमितता, अपूर्णता और निष्क्रियता पाया जाता है। उच्चतम चिदणु ईश्वर ही पूर्णतः सक्रिय है। प्रत्येक चिदणु विकास के क्रम में है अर्थात निष्क्रियता से सक्रियता की ओर सदैव अग्रसर हो रहे हैं। प्रत्येक चिदणु में शक्ति समान है परन्तु शक्ति के विकास में भेद है। इसी विकास भेद के कारण चिदणु असमान हैं। सभी चिदणु का एकमात्र लक्ष्य परम चिदणु से एकाकार करना है।

लाइबनित्ज के चिदणुवाद के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि- लाइबनित्ज अपने चिदणुवाद के आधार पर परमाणुवादी डिमॉक्रिटस एवं बुद्धिवादी देकार्त, स्पिनोजा आदि के विचारों में समन्वय करने का प्रयास किया है। लाइबनित्ज विज्ञान और धर्म, एक और अनेक, यंत्रवाद एवं प्रयोजनवाद नियति और स्वतंत्रता में समन्वय किया है। इस प्रकार से लाइबनित्ज के दर्शन में पूर्ववर्ती एवं परवर्ती सभी विचारों का समन्वय किया गया है। लाइबनित्ज के चिदणुवाद में कुछ दोष दृष्टिगत है। एक ओर वह अंतिम चिदणु की सत्ता को मानता है जो पूर्ण एवं स्वतंत्र है, वहीं दूसरी ओर परम चिदणु के माध्यम से असम्बद्ध चिदणु में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है, यहाँ चिदणुओं की पूर्णता एवं स्वतंत्रता एवं सामंजस्यपूर्णता दोनों एक साथ तर्कसंगत नहीं है।

Scanned with CamScanner